International Journal of Arts & Education Research

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं परम्परागत शिक्षा प्रणाली में अध्ययन बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की पर्यावरण अवबोध, पर्यावरणीय शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति तथा प्रशिक्षण आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन

डां0 अल्का सिंह*[1]

शोधकर्त्री

प्रस्तावना

पर्यावरण एक व्यापक सम्प्रत्यय है। मनुश्य जिस प्राकृतिक, समाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितियों में रहता है, वह सब उसका पर्यावरण होता है, परन्तु पर्यावरणीय शिक्षा केवल उसके प्राकृतिक पर्यावरण की जानकारी तक सीमित रहती है, अतएव मुझे पर्यावरण के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों व जनसामान्य की पर्यावरण से सम्बन्धित सभी तथ्यों के अवबोध व पर्यावरण प्रि-क्षण का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

वर्तमान समय में शुद्ध पर्यावरण एक ज्वलंत समस्या है और पर्यावरण संरक्षण हमारा प्रथम कर्तव्य है और प्रदूशण को कम करना अगला चरण है, अतः इस प्रकार पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है। आज के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणीय ि-क्षा जन सामान्य के लिए आव-यक है जिससे उन्हें बढ़ते प्रदूशण से मानवीय विकास व भौतिक पर्यावरण के प्रभावित होने की जानकारी मिल सके। उनमें पर्यावरण के प्रति साकारात्मक व वैज्ञानिक दृश्टिकोण का विकास हो सके तथा उनकी चेतना, अभिरूचि व अभिवृत्ति विकसित हो सके। इसके साथ-साथ पर्यावरणीय शिक्षा इसलिए भी आव-यक है जिसमें युवाओं का औद्योगीकरण से जन्मा उपभोक्तावाद एवं उसके परिणाम स्वरूप प्रकृति के लगातार दोहन से उत्पन्न समस्याओं के प्रति जागरूक करके समाज का दायित्वपूर्ण सदस्य बनाया जा सके। इसी परिप्रेक्ष्य में मैंने अपना शोध कार्य किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पाँच अध्याय में विभक्त है। शोध प्रबन्ध के अन्त में संदर्भ ग्रन्थ सूची व परिशिश्ट इत्यादि का उल्लेख है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत पर्यावरण :ाब्द की व्याख्या वि-व व भारत स्तर पर पर्यावरणीय चेतना को रेखांकित किया गया है तथा वर्तमान परिपेक्ष्य में पर्यावरणीय शिक्षा की आव-यकता महत्व व समस्या को चिन्हित करते हुए शोध समस्या को प्रस्तुत किया गया है। उक्त अध्याय के अंत में शोध अध्ययन के उद्देश्य, परिकल्पनाएं शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त :ाब्दावली को परिभाशित करते हुए शोध अध्ययन की सीमाओं को प्रस्तुत किया गया है।

*Corresponding Author

शोध के उद्देश्य

अनुसंधान समस्या की उपरोक्त वर्णित पृश्ठभूमि के आलोक में प्रस्तुत :ोध के उद्दे-यों को निम्नवत ढंग से लिखा जा सकता है-

1. परम्परागत व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् बी.एड. प्रि-िक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध के स्तर का अध्ययन करना।

2. सामान्य, वर्ग, पिछड़े वर्ग व अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध के स्तर का अध्ययन करना।

3. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध के लिए शिक्षा प्रणाली तथा सामाजिक वर्ग के कारकों में अर्न्तक्रिया का अध्ययन करना।

4. परम्परागत व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

5. सामान्य, पिछड़े वर्ग व अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

6. बी.एड. प्रि-िक्षणार्थियों के पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आव-यकता प्रत्यक्षीकरण में शिक्षा प्रणाली तथा सामाजिक वर्ग कारकों के अर्न्तक्रिया का अध्ययन करना।

7. परम्परागत व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।

8. सामान्य वर्ग, पिछड़े वर्ग व अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।

9. महिला एवं पुरूश बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध के स्तर का अध्ययन करना।

10. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध के लिये शिक्षा प्रणाली तथा लिंग भेद में अर्न्तक्रिया का अध्ययन करना।

11. पुरूश एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

12. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण ि-िक्षा के प्रति अभिवृत्ति के लिये ि-िक्षा प्रणाली तथा लिंग भेद में अर्न्तक्रिया का अध्ययन करना।

13. पुरूश एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरवणीय प्रशिक्षणस की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।

14. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण में शिक्षा प्रणाली तथा लिंगभेद में अर्न्तक्रिया का अध्ययनकरना।

15. विज्ञान व कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध के स्तर का अध्ययन करना।

16. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध के स्तर के लिये शिक्षा प्रणाली एवं अध्ययन वर्ग के अर्न्तक्रिया का अध्ययन करना।

17. विज्ञान एवं कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध के स्तर पर अध्ययन करना।

18. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के लिये शिक्षा प्रणाली तथा अध्ययन वर्ग के अर्न्तक्रिया का अध्ययन करना।

19. विज्ञान व कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण में शिक्षा प्रणाली तथा अध्ययन वर्ग में अर्न्तक्रिया का अध्ययन करना।

20. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण में शिक्षा प्रणाली तथा अध्ययन वर्ग में अर्न्तक्रिया का अध्ययन करना।

1.08 शोध परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध में वर्णित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्न परिकल्पनायें बनायी गयी हैं-

1. परम्परागत व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत् बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध में सार्थक अंतर है।

2. सामान्य वर्ग, पिछड़े वर्ग व अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबेध में सार्थक अंतर है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

3. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध के लिए शिक्षा प्रणाली तथा सामाजिक वर्ग कारकों में सार्थक अर्न्तक्रिया है।

4. परम्परागत व दूरस्थ ि-िक्षा प्रणाली में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

5. सामान्य पिछड़े वर्ग व अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों मे पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

6. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति के लिए शिक्षा प्रणाली तथा सामाजिक वर्ग कारकों में सार्थक अन्तर है।

7. परम्परागत व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली मे अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्याक्षीकरण में सार्थक अंतर है।

8. सामान्य वर्ग, पिछड़े वर्ग व अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण में अंतर है।

9. महिला एवं पुरूश बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध में सार्थक अंतर है।

10. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध के लिए शिक्षा प्रणाली तथा लिंग भेद में सार्थक अर्न्तक्रिया है।

11. पुरूश एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

12. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति के लिये शिक्षा प्रणाली तथा लिंग भेद में सार्थक अर्न्तक्रिया है।

13. पुरूश व महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अंतर है।

14. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण में शिक्षा प्रणाली तथा लिंगभेद में सार्थक अर्न्तक्रिया है।

15. विज्ञान व कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध में सार्थक अंतर है।

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

16. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध के लिए शिक्षा प्रणाली तथा अध्ययन वर्ग में सार्थक अर्न्तक्रिया है।

17. विज्ञान व कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

18. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति के लिये शिक्षा प्रणाली तथा अध्ययन वर्ग में सार्थक अर्न्तक्रिया है।

19. विज्ञान व कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है।

20. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण में शिक्षा प्रणाली तथा अध्ययन वर्ग में सार्थक अर्न्तक्रिया है।

द्वितीय अध्याय जो कि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से सम्बन्धित है के अर्न्तगत 1990 से 2013 तक विदे-ा व भारत में किए गये 46 महत्वपूर्ण शोध का सारांश व निश्कर्श अंकित करते हुए प्रस्तुत शोध कार्य की आवश्यकता को विवेचित किया गया है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि, प्रतिदर्श चयन विधि, मापन उपकरण की व्याख्या व उपभोग तथा सांख्यिकीय विधि का वर्णन प्रस्तुत है। शोध विधि प्रस्तुत अध्ययन में समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक शोध की एक विधि सर्वेक्षणात्मक विधि को अपनाया गया है। प्रतिदर्श चयन विधि प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श चयन हेतु द्विस्तरीय यादृच्छिक चयन विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा दूरस्थ ि-ाक्षा प्रणाली एवं परम्परागत शिक्षा प्रणाली के द्वारा क्रमशः 9 व 6 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं का चयन करके पुनः यादृच्छिक विधि द्वारा 600 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया।

शोध अध्ययन में प्रियदर्श के रूप में चयनित बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की सूची क्रमशः सारणी 3.01, 3.02, 3.03 में प्रस्तुत की जा रही है।

सारणी 3.01 विभिन्न सामाजिक वर्गों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिदर्श संख्या

शिक्षा प्रणाली	सामान्य वर्ग	अन्य पिछड़े वर्ग	अनुसूचित जाति	कुल
परम्परागत	190	71	39	300
दूरस्थ	207	48	45	300
सम्पूर्ण कुल	397	119	84	600

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

सारणी 3.02 लिंग के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के प्रतिदर्श की संख्या

शिक्षा प्रणाली	पुरुश	महिला	कुल
परम्परागत	210	90	300
दूरस्थ	156	144	300
सम्पूर्ण कुल	366	234	600

सारणी 3.03 अध्ययन वर्ग के आधार पर बी.एड. प्रि-क्षणार्थियों के प्रतिदर्श की संख्या

शिक्षा प्रणाली	विज्ञान	कला	कुल
परम्परागत	95	205	300
दूरस्थ	108	192	300
कुल	203	397	600

मापन उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रायोज्यों के समंकों को एकत्रित करने के लिए तीन मापन उपकरणों का प्रयोग किया गया है। जिसमें से दो मापन उपकरण पहले से ही संरचित वैध व विश्वसनीय है। मापन उपकरणों में क्रमशः प्रथम पर्यावरण अवबोध चर की तुलना के लिए डा0 पी.के. झा द्वारा संरचित पर्यावरण अवबोध मापनी, द्वितीय पर्यावरण अभिवृत्ति चर की तुलना हेतु डा0 आर.आर. सिंह द्वारा संरचित पर्यावरणीय अभिवृत्ति मापनी तथा तृतीय पर्यावरण प्रशिक्षण आव-यकता चर की तुलना हेतु स्वःनिर्मित पर्यावरण प्रशिक्षण आवश्यकता मापनी का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विधि प्रस्तुत शोध अध्ययन में संकलित किये गये समंको के आधार पर कुल बीस परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है। प्रस्तुत :ाोध अध्ययन एक तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह तीन सामाजिक वर्ग तथा सामान्य अन्य पिछड़ी जाति व अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के मध्य पर्यावरण अवबोध, पर्यावरण शिक्षा के सन्दर्भ में अभिवृत्ति तथा प्रशिक्षण आव-यकता पर आधारित तुलनात्मक अध्ययन है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन की इक्कीस परिकल्पनायें मध्यमानों के अन्तरों से सम्बन्धित हैं जिनके परीक्षण के लिए द्विमार्गी प्रसरण वि-लेशण विधि तथा प्रसरण विश्लेशणोपरान्त टीश्परीक्षण विधि का प्रयोग किया है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त समंको का विश्लेशण किया गया है तथा उनकी व्याख्या प्रस्तुत की गयी है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत प्रस्तुत :ाोध अध्ययन के निश्कर्श, शैक्षिक निहितार्थ एवं आगामी :ाोध अध्ययन के सुझाव का वर्णन किया गया है।

निश्कर्श :

1. परम्परागत शिक्षा प्रणाली के बी.एड. प्रि-िक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है।

2. सामान्य वर्ग एवं पिछड़े वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध में कोई अन्तर नहीं है जबकि अनुसूचित जाति में पर्यावरण अवबोध सामान्य वर्ग एवं पिछड़े वर्ग की तुलना में कम है।

3. परम्परागत शिक्षा प्रणाली एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिये सामान्य वर्ग, पिछड़े वर्ग तथा अनुसूचित जाति वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध की प्रवृत्ति समान है।

4. परम्परागत शिक्षा प्रणाली के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है।

5. सामान्य वर्ग एवं पिछड़े वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है, जबकि अनुसूचित जाति में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य वर्ग एवं पिछड़े वर्ग की तुलना में अभिवृत्ति कम है।

6. परम्परागत शिक्षा प्रणाली के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक है अर्थात् परम्परागत शिक्षा प्रणाली के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों प्रशिक्षणार्थी अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने के पक्ष में है।

7. सामान्य वर्ग एवं पिछड़े के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता में कोई अन्तर नहीं है, जबकि अनुसूचित जाति के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण प्रशिक्षण की आवश्यकता सामान्य वर्ग एवं पिछड़े वर्ग की तुलना में अधिक है। अर्थात् अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित हो इसके पक्ष में सामान्य वर्ग व पिछड़े वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों अधिक है, तुलना में अनुसूचित जाति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

8. परम्परागत शिक्षा प्रणाली एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिये सामान्य वर्ग, पिछड़े वर्ग तथा अनुसूचित जाति वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण आवश्यकता की प्रवृत्ति समान नहीं है।

9. पुरूश बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक है।

10. परम्परागत शिक्षा प्रणाली एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिये पुरूश एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध की प्रवृत्ति समान है।

11. पुरूश बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है।

12. परम्परागत शिक्षा प्रणाली एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिये पुरूश बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवं महिला बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की प्रवृत्ति समान है।

13. पुरूश बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण की आवश्यकता महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है अर्थात् पुरूश प्रशिक्षणार्थी इस पक्ष में अधिक सहमत है कि अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण प्रशिक्षण कार्यक्रम की अधिक आवश्यकता है।

14. परम्परागत शिक्षा प्रणाली एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिये पुरूश बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवं महिला बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय प्रशिक्षण आवश्यकता की प्रवृत्ति समान है।

15. विज्ञान वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक है।

16. परम्परागत शिक्षा प्रणाली एवं दूरस्थ प्रणाली में अध्ययपात विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण अवबोध की प्रवृत्ति समान नहीं है।

17. विज्ञान वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है।

18. परम्परागत शिक्षा प्रणाली एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिये विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की प्रवृत्ति समान है।

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

19. विज्ञान वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है, अर्थात् विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षणार्थी अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यक अधिक मानते है।

20. परम्परागत शिक्षा प्रणाली एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिये विज्ञान व कला वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण प्रशिक्षण आवश्यकता प्रत्यक्षीकरण की प्रवृत्ति समान है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध कार्य समसामयिक परिस्थितियों में पर्यावरण सम्बन्धी तथ्यों को उजागर करने व समाज के विभिन्न वर्गों में पर्यावरणीय जागरूकता लाने के उद्देश्य से किया गया है। वर्तमान समय में पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं अत्यधिक बढ़ गई और इनके कारण विभिन्न रोगों और प्राकृतिक आपदाओं की संख्या बढ़ रही है। विज्ञान ने प्रगति तो अवश्य ही की है परन्तु साथ ही पर्यावरण की शुद्धता भी प्रभावित हुई है। अतः पर्यावरण की शुद्धता व समाज को सुरक्षित रखने के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जिस पर प्रस्तुत शोध कार्य किया है।

वर्तमान युग का मनुश्य प्रकृति का मित्र नहीं बनना चाहता, उसकी उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आकांक्षाओं और भौतिक सफलता ने उसे विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दि ह। पर्यावरण असीम है उसमें व्यक्ति की सत्ता सागर में एक बूंद के समान है व्यक्ति के विकास एवं जागरूकता के लिए स्वच्छ पर्यावरण का होना आवश्यक है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों में पर्यावरण अवबोध को बढ़ाने, पर्यावरण अभिवृत्ति का स्तर ऊचाँ करने व पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आव-यकता को समझने की दृश्टि से किया गया है। समाज में पर्यावरणीय अवबोध को बढ़ाने, पर्यावरणीय अभिवृत्ति के स्तर को उच्च करने में और पर्यावरणीय प्रशिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल देने में परम्परागत शिक्षा प्रणाली किस प्रकार सक्षम है उसी प्रकार दूरस्थ शिक्षा प्रणाली भी सक्षम हो सकती है। परम्परागत शिक्षा में तो ि-क्षार्थियों को वि-वविद्यालय या महाविद्यालयों में आकर पर्यावरणीय ि-क्षा सम्बन्धी जानकारी मिलेगी परन्तु इसके विपरीत दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा लोगों को पर्यावरणीय ि-क्षा सम्बन्धी जानकारी उनके घर पर रहते ही प्राप्त हो सकेगी। अतः आव-यकता इस तथ्य की होनी चाहिए कि पर्यावरणीय सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी को देने के लिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और स-क्त व सक्षम बनाय जाय। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों पर आए परिणाम से ज्ञात होता है कि इस प्रणाली में अभ्यर्थियों की तुलना में कम है। अतः हमे चाहिए कि पर्यावरणीय अवबोध के लिए हमें पर्यावरण की शुद्धता पर्यावरण के विभिन्न अवयवों संतुलन की दशा भौतिक रासायनिक और जैविक लक्षणों की जानकारी इत्यादि तथ्यों को दूरस्थ ि-क्षा प्रणाली में पर्यावरण शिक्षा के रूप में डालना अति आव-यक है, जिसमें दूरस्थ शिक्षा प्रणाली कके अभ्यर्थियों के पर्यावरणीय अवबोध का उत्तर और बढ़ सके।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

इसके अतिरिक्त समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य भी पर्यावरण अवबोध पर अन्तर आया जिसमें ज्ञात होता है कि अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय अवबोध सामान्य व पिछड़े वर्ग की तुलना में कम है अतः प्रस्तुत शोध कार्य इस दिशा के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा वि-ोश एक वर्ग में पर्यावरण अवबोध की कमी का संज्ञान होता है। अतः हम परम्परागत व दूरस्थ दोनों ही शिक्षा माध्यमों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय अवबोध का स्तर उच्च कर सकते है। अनुसूचित जाति के लोगों में पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ाने के लिए चलचित्र, नुक्कड़ नाटक के माध्यम, धार्मिक नेताओं के सम्भाशणों द्वारा प्रेरित किया जाना चाहिए।

महिला-पुरूश सभी प्रशिक्षार्थियों में पर्यावरणीय अवबोध को बढाने के लिए वनों के संरक्षण हेतु जानकारी उपलब्ध करायी तथा पेड़ पौधों को लगाने के लिए प्रेरित किया जाय। इसके विभिन्न स्कूल कालोज में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आव-यकता पर बल दिया जाना चाहिए।

प्राथमिक स्तर से ही पर्यावरणीय अभिवृत्ति को मजबूत किया जाना चाहिए और इसे करने के लिए प्राथमिक स्तर से ही पाठयक्रम में पर्यावरण शिक्षा व प्रशिक्षण की आवश्यकता को समझाना चाहिए।

प्रस्तुत शोध कार्य सये शोधकर्ता इस निश्कर्श पर पहुँचा है कि समाज में विभिन्न स्तर पर वर्ग के अधिकांश लोगों में पर्यावरण संचेतना बहुत कम है और इस संचेतना को प्रबुद्ध करने के लिए प्राथमिक माध्यमिक व विश्वविद्यालय इन तीनों ही स्तर पर पर्यावरण शिक्षा व प्रशिक्षण की आवश्यकता है। समाज के विभिन्न वर्गों में पर्यावरण सम्बन्धी जानकारी न होने के कारण होने वाली समस्या से भी प्रस्तुत :ाोध अध्ययन के महत्व को पुश्ट करती है। प्रस्तुत शोध में परिणाम शिक्षा जगत व समाज के लिए व्यावहारिक क्षेत्रों से सम्बन्धित एवं संलग्न व्यक्तियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण व उपयोगी सिद्ध हो सकते है। यह शोध अध्ययन इस तथ्य को समझाने में सक्षम है कि विकास और पर्यावरण एक दूसरे से विरोधी नहीं अपितु एक दूसरे के पूरक है। एक संतुलित एवं प्रफुल्ल पर्यावरण के माध्यम से ही विकास के प्रयास किये जा सकते हैं। यह शोध अध्ययन इस उद्देश्य से भी महत्वपूर्ण है कि बी.एड. प्रशिक्षार्थी या समाज के अन्य वर्ग लोग पर्यावरणीय ि-क्षा व उसके प्रि-क्षण की आवश्यकता को समझे तथा साथ ही साथ यह भी समझ सके कि प्राकृतिक संसाधन का दोहन विकास के लिए आवश्यकता है परन्तु विकास के अन्धी दौड़ में संसाधनों का दोहन तीव्रता से न करके बल्कि समझबूझ कर संरक्षित करके पर्यावरण को भी स्वच्छ रखे और विकास भी करें।

आगामी शोध अध्ययनों के लिये सुझाव :

प्रस्तुत शोध अध्ययन दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं परम्परागत शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को पर्यावरणीय अवबोध, पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शिक्षा से सम्बन्धित किसी भी समस्या को भली-भाँति समझने तथा उसका समाधान खोजने के लिये कोई एक अनुसंधान कार्य पर्याप्त नहीं है, वरन् अनेकों अनुसंधान कार्यों की

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

आवश्यकता होती है। किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिये यह संभव नहीं होता कि वह समस्या से संबंधित सभी घटकों अथवा सभी क्षेत्रों को अपने अनुसंधान कार्यों से सम्मिलित कर सके अथवा सभी प्रकार की जनसंख्याओं को अपने अध्ययन में समाहित कर सके। समय, धन तथा परिसीमाओं के कारण प्रस्तुत अनुसंधान को भी परिसीमित होने के लिये बाध्य होना पड़ा। प्रस्तुत अनुसंधान की परिसीमाओं की चर्चा प्रथम अध्याय में की जा चुकी है। नि'संदेह प्रस्तुत :ाोध कार्य से प्राप्त परिणामों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण अवबोध, पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा पर्यावरण प्रि-ाक्षण की आवश्यकता से संबधिंत कारकों के सम्बन्ध में कुछ उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई है। परन्तु फिर भी ऐसे अनेकों प्रश्न है जो अभी भी अनुत्तरित है तथा जिनके समाधान के लिये अनुसंधान प्रयासों की आव-यकता है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्यों के लिये निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते है।

1. पर्यावरण प्रशिक्षण की आवश्यकता तथा अवबोध अध्ययन प्राथमिक स्तर व माध्यमिक स्तर के शिक्षकों व शिक्षार्थियों पर भी किया जा सकता है।

2. पर्यावरण अवबोध व पर्यावरण अभिवृत्ति जैसे चरों को जिले स्तर से लेकर राश्ट्र स्तर तक भी शोध अध्ययन करने की संभावनाएं दृश्टिगत होती हैं।

3. शिक्षा के विभिन्न स्तर पर शिक्षकों प्रशासकों व गैर शिक्षक वर्ग के पर्यावरणीय प्रशिक्षण व पर्यावरण अभिवृत्ति पर भी शोध अध्ययन करना एक सार्थक कदम है।

4. ग्रामीण परिवेश व महानगरीय परिवे-ा पर पर्यावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अल्बर्ट, डब्ल्यू.एस., रेनसिक, आर.ए. व ब्यूसमैन्स, जे. (1999). लर्निंग रिलेटिव डाइरेक-ान्स बिटवीन लैण्डमार्क्स इन ए डेस्कटाप वर्चुअल एन्वायरनमेन्ट, स्पेशियल काग्निशन एण्ड कम्पूटेशन, 1, 131-144।

अग्रवाल, एस.सी. (1981), लर्निंग स्टाइल : ए न्यू एरिया एट रिसर्च, जर्नल आफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेन्सन, 172-177।

अग्रवाल, वाई.पी. (1986) स्टेटिकल मेथडस, कान्सेप्टस एप्लीके-ान एण्ड कम्प्युटे-ान, नई दिल्ली, स्टर्लिंग पब्लिशिंग प्रा.लि., 252-266।

अलब्रेक्ट, डी., बुल्छेना, जी., हाईवर्ग, ई. व नोवाक, पी. (1982), व न्यू एन्वायरनमेन्टल पैराडाइम स्केल, जर्नल आफ एन्वायरनमेन्टस एजूकेशन, 13, 39-43।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

आर्मस्ट्रांग, जे. बी. व इन्सपारा, जे.सी. (1991), द इम्पैक्ट आफ एन एन्वायरनमेन्टल एजूकेशन प्रोग्राम आन नॉलेज एटीट्यूट, जर्नल आफ एन्वायरनमेन्टल एजूके-न, 22 (4)।

आसकैम्प, एस. (2000), ए सस्टेनेबल फ्यूचर फार ह्यूमैनिटी : हाउ कैन साइकोलॉजी हेल्प, अमेरिकन साइकोलॉजी, 55, 496-508।

इवान्स, जी. डब्ल्यू., वेल्स, एन.एम. बचान, एच.वाई.ई. (2001), हाउसिंग क्वालिटी एण्ड मेन्टल हेल्थ, जर्नल आफ कांसस्टिंगे एण्ड क्लीनिकल साइकोलॉजी, 58 (3), 626-531।

एडवडर्स, ए. एल. (1971) एक्सपेरीमेन्टल डिजाइन इन साइकोलाजिकल रिसर्च, नई दिल्ली, अमरिन्द पब्लिशिंग कम्पनी, 263-265।

उपाध्याय, प्रतिभा (2007), भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ, इलाहाबाद, :ारदा पुस्तक भवन, 18-22।

कारलिंगर, एफ.एन. (1986), फाउण्डेशन आफ विहेवियरल रिसर्च, न्ययार्क, हाल्ट रिंचेस्टस किस्टन, 279।

कायस्थ, एस. एल. व कुम्रा, बी. के. (1986), एन्वायरनमेन्टल स्टडीज, वाराणसी : फन्डामेन्टल प्राब्लम्स एण्ड मैनेजमेन्ट।

कथूरिया, पी.ओ. (1989), पर्यावरण क्रियाकलापों में शिक्षा का योगदान, अहमदाबाद : नेहरू विकास प्रतिश्ठान प्रकाशन।

क्राइस, आर. (1991) द इफेक्ट आफ ए कंजरवेशन प्रोग्राम आन स्कूल चिल्ड्रन्स एटीट्यूड्स टुवर्डस द एन्वायरनमेन्ट, जर्नल आफ एन्वायरमेन्टल एजूकेशन, 22, (4), 89-94।

किदवई, जीनत (1991), डेवलपमेन्ट आफ इन एन्वायरमेन्टली ओरियन्टेड करीकुलम इन ज्योग्राफी एट सेकेन्ड्री स्टेज, इन्डियन रिव्यू, 26 (3), 87-94।

कपूर, सन्दीप (1996), पर्यावरण और युवाओं की भूमिका, कुरूक्षेत्र, 41 (7), 41-42।

कीथ, एम. (1991), द इफेक्ट आफ द सनशिप अर्थ प्रोग्राम आन नॉलेज एण्ड एटीट्यूड डेवलपमेन्ट, जर्नल आफ एन्वायरनमेन्टल एजूकेशन, 32 (3)।

कौल, एम. एन. व मंजू, आर.के. (2002), भौतिक भूगोल के मूल सिद्धान्त, नई दिल्ली : राश्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिशद, 3-4।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

कुमार चन्द्र, सुजीत व गौरहा मानू, त्रिपाठी बबिता, (2006), एन्वारनमेंटल अवेयरनेस, एन्वायरमेंटल एटीट्यूड एण्ड इन्टरनेशनल इकोलाजिकल विहेवियर एमांग कम्परेटिव स्टडी, यूनिवर्सिटी न्यूज, 4 (12), 159-161।

कूपर्स, बी., टिकूकी, डी., स्टेंकिविज, बी. (2003), द स्केलेटन इन द काग्निटिव मैप, ए कम्प्यूटेशनल एण्ड इम्पीरिकल एक्सप्लोरेशन, एन्वायरमेन्टल एण्ड बिहेवियर, 35 (1), 81-106।

गजियन, टी.जे. व थॉमसए एम.पी. (1991), चेंजिग एन्वायरनमेन्टली रेलेवैन्ट बिहेवियर, एन्वायरमेन्टल एजुकेशन एण्ड इन्फारमे-न, 10 (2), 101-12।

गीतमाला (2007), परिशदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. व विि-ाश्ट बी.टी.सी. शिक्षकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, जर्नल ऑफ एजूकेशनल स्टडीज (5), 56।

गुर्जर, राजकुमार व जाट, बी.सी. (2002), मानव एवं पर्यावरण, जयपुर पंचशील प्रकाशन, 37-40

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.